आधुनिक भारत का इतिहास (Modern Indian History)

1. परिचय

आधुनिक भारत का इतिहास मुख्य रूप से 18वीं शताब्दी के मध्य में मुगल साम्राज्य के पतन, यूरोपीय शक्तियों के आगमन, ब्रिटिश शासन की स्थापना और अंततः भारत के स्वतंत्रता संग्राम की कहानी है।

2. परिभाषा

आधुनिक भारतीय इतिहास वह कालखंड है जो पारंपरिक मध्यकालीन सामाजिक-राजनीतिक संरचनाओं के टूटने और पश्चिमी प्रभाव, वैज्ञानिक सोच, राष्ट्रवाद और लोकतांत्रिक मूल्यों के उदय को दर्शाता है। यह 1707 (औरंगजेब की मृत्यु) से शुरू होकर 1947 (स्वतंत्रता) तक के प्रमुख परिवर्तनों का अध्ययन है।

3. चरण-दर-चरण व्याख्या (Step-by-Step Explanation)

चरण 1: मुगल साम्राज्य का पतन और क्षेत्रीय शक्तियों का उदय

1707 में औरंगजेब की मृत्यु के बाद, केंद्रीय सत्ता कमजोर हो गई। इसके परिणामस्वरूप बंगाल, अवध, हैदराबाद और मराठा जैसे क्षेत्रीय राज्य स्वतंत्र होने लगे। इसी राजनीतिक शून्यता का लाभ उठाकर विदेशी कंपनियों ने हस्तक्षेप शुरू किया।

चरण 2: यूरोपीय कंपनियों का आगमन और संघर्ष

भारत के व्यापार पर नियंत्रण के लिए पुर्तगाली, डच, फ्रांसीसी और अंग्रेज (ब्रिटिश) आपस में लड़े। अंततः, 'कर्नाटक युद्धों' के बाद अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों को हराकर अपनी सर्वोच्चता सिद्ध की। 1757 के प्लासी के युद्ध और 1764 के बक्सर के युद्ध ने बंगाल पर अंग्रेजों का राजनीतिक नियंत्रण स्थापित कर दिया।

चरण 3: ब्रिटिश प्रशासनिक और आर्थिक नीतियां

ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपनी पकड़ मजबूत करने के लिए विभिन्न भूमि राजस्व प्रणालियाँ लागू कीं:

* स्थायी बंदोबस्त (Permanent Settlement): जमींदारों को भूमि का स्वामी बनाया गया।

* रैयतवाड़ी (Ryotwari): सरकार ने सीधे किसानों से लगान वसूला।

* महलवाड़ी (Mahalwari): पूरे गाँव (महल) को कर भुगतान की इकाई माना गया।

इन नीतियों से भारतीय कृषि और कुटीर उद्योगों का विनाश हुआ, जिसे 'धन का निष्कासन' (Drain of Wealth) कहा जाता है।

चरण 4: 1857 का विद्रोह

यह ब्रिटिश शासन के खिलाफ पहला बड़ा सशस्त्र विद्रोह था। हालांकि यह असफल रहा, लेकिन इसने ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन को समाप्त कर दिया और भारत का प्रशासन सीधे ब्रिटिश क्राउन (रानी) के हाथों में चला गया।

चरण 5: भारतीय राष्ट्रवाद का उदय और कांग्रेस की स्थापना (1885)

पश्चिमी शिक्षा और सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों (जैसे राजा राममोहन राय और दयानंद सरस्वती के प्रयास) ने भारतीयों में चेतना जगाई। 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई, जिसने शुरू में संवैधानिक सुधारों की मांग की।

चरण 6: गांधीवादी युग और जन आंदोलन (1915-1947)

1915 में महात्मा गांधी के भारत आगमन के बाद स्वतंत्रता संग्राम एक जन आंदोलन बन गया। उन्होंने सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलते हुए तीन प्रमुख आंदोलन किए:

* असहयोग आंदोलन (1920-22): विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार।

* सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930): दांडी मार्च और नमक कानून का उल्लंघन।

* भारत छोड़ो आंदोलन (1942): 'करो या मरो' का नारा और अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालने का अंतिम प्रयास।

चरण 7: विभाजन और स्वतंत्रता

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद ब्रिटिश सरकार भारत को संभालने में असमर्थ थी। सांप्रदायिक दंगों और मुस्लिम लीग की अलग देश की मांग के कारण 15 अगस्त 1947 को भारत का विभाजन हुआ और भारत को स्वतंत्रता मिली।

4. मुख्य बिंदु (Key Points)

* ईस्ट इंडिया कंपनी: एक व्यापारिक कंपनी जिसने भारत पर लगभग 100 वर्षों (1757-1858) तक शासन किया।

* सहायक संधि (Subsidiary Alliance): लॉर्ड वेलेज़ली द्वारा शुरू की गई नीति जिससे भारतीय राज्यों को ब्रिटिश सेना रखने और उसके बदले भुगतान करने के लिए मजबूर किया गया।

* व्यपगत का सिद्धांत (Doctrine of Lapse): लॉर्ड डलहौजी की नीति, जिसके तहत बिना प्राकृतिक उत्तराधिकारी वाले राज्यों को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया (जैसे झाँसी)।

* नरम दल और गरम दल: कांग्रेस के दो गुट। नरम दल (गोखले, नौरोजी) प्रार्थना में विश्वास रखते थे, जबकि गरम दल (तिलक, लाजपत राय) स्वराज के लिए संघर्ष में।

* क्रांतिकारी आंदोलन: भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद और सुभाष चंद्र बोस जैसे नेताओं ने बल प्रयोग के माध्यम से आजादी का सपना देखा।

5. महत्वपूर्ण शब्दावली (Important Terms)

* उपनिवेशवाद (Colonialism): जब एक शक्तिशाली देश दूसरे देश पर राजनीतिक और आर्थिक नियंत्रण स्थापित करता है।

* साम्राज्यवाद (Imperialism): अपने राज्य की सीमाओं और शक्ति को बढ़ाने की नीति।

* द्वैध शासन (Diarchy): प्रशासन की वह प्रणाली जहाँ शासन के विषयों को दो भागों में विभाजित किया जाता है।

* सत्याग्रह (Satyagraha): सत्य के लिए आग्रह करना; गांधीजी का अहिंसक प्रतिरोध का हथियार।

* स्वराज (Swaraj): स्व-शासन या अपना शासन।

6. उदाहरण (Real-life Contextual Examples)

* विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार: जैसे आज हम स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने की बात करते हैं (Vocal for Local), वैसे ही उस समय 'स्वदेशी आंदोलन' के दौरान मैनचेस्टर के कपड़ों को जलाकर भारतीय खादी को अपनाया गया था।

* कर का विरोध: जैसे वर्तमान में अनुचित टैक्स वृद्धि पर लोग प्रदर्शन करते हैं, गांधीजी ने 'नमक कर' का विरोध किया क्योंकि नमक हर व्यक्ति की बुनियादी जरूरत थी।

* प्रशासनिक परिवर्तन: जिस तरह आज भारत में IAS/IPS अधिकारी जिले का प्रशासन संभालते हैं, इसकी नींव अंग्रेजों द्वारा स्थापित 'इंडियन सिविल सर्विसेज' (ICS) में रखी गई थी।

7. तकनीकी पहलू: प्रशासनिक संरचना (Structure of British Rule)

ब्रिटिश शासन की संरचना को समझने के लिए निम्नलिखित पदानुक्रम को देखा जा सकता है:

कानून निर्माण प्रक्रिया:

* रेगुलेटिंग एक्ट 1773: कंपनी पर नियंत्रण की शुरुआत।

* पिट्स इंडिया एक्ट 1784: राजनीतिक और व्यापारिक कार्यों का पृथक्करण।

* चार्टर एक्ट्स (1813, 1833, 1853): कंपनी के व्यापारिक एकाधिकार की समाप्ति।